साई राम जी

मेरा नाम दीपक है। मेरी माँ का बड़ी गम्भीर स्थिति मे सन् 2004 मे दिहांत हुआ यही मेरे पिता जी के साथ हुआ था मुझे लगा की ज्यादातर लोगो ही दुखी है।

मेने 2006 मे अपने माता-पिता की याद मे दादरी में श्री साई निशुल्क उपचार केन्द्र की स्थापना की थी जहा पर एक्युप्रेशर, आयुर्वेद और दवाईयों के माध्यम से लोगो का पुराना निशुल्क इलाज होता था।

इसके लिए मेने दादरी की एकलोती मेरी माता की छोटी सी सम्पती से यागरा को समर्पित कर दी।

इशवर की अनुकमा हुई बहुत दुर से लोग आने लगे स्टाफ और डा. को सेलेरी पर रखते थे बेहतर तरीके से काम कर सकें।

मुझे इस कदर जनुन हुआ की 2012 मे सब कुछ छोड-छाड कर मे खुद भी वहा जा कर बेठ गया और निशुल्क दवा का विस्तन भी शुरू कर दिया। लोगो की दिवांगी थी इस केन्द्र के प्रति जो लोग कही और निराश होते थे वह लोग यहा पर टीक हो रहे थे।

2014 के बाद मुझे लगा की लोग शारिरिक दुख से नही बलकी सुख शांती के लिऐ वयर्थ है।

अपने पुर्वा संचीत करम और जाने अंजाने में हुए अपराधो के चलते मांसीक रूप से आहत है। शरीरीक बिमारी का उपचार साधारन दवा से हो सकता है प्रंतू कर्म की भक्ती मे जलते जीवो को सुकुन की ज्यादा जरूरत है ।

लोग निरंतण मुझ से आगरह कर रहै थे मुझे भी महसुस हुआ यदी जिवों को कुपया मील जाए तो शायद एक बहतर युग के बहतर राष्ट्रीय की स्थापना होसक्ती हैं।

इस लिए 2017 में वापिस दादरी मे शिफ्ट हो गया ताकी दुख में जलते जिवों को कुछ राहत पहुचा सकु। प्रंतु दादरी मे वही दवा और साधारण उपचार की आस लेकर लोग मिलने लगे लगभग 5 महीने में वहा यथा सम्भव प्रयास करता रहा। मेरे जान्ने वाले लगातार मुझ से कहते रहे की किसी आसान पहुचने वाली जगाह पे मे यह सेवा करू। खेर अब मे यहा अपना कार्यालय स्थापित कर चुका हु मेने सेवा को अपना जिवन समर्पित कर चुका हु।

पांडवो के प्रतेक संपदा के मालीक होते हुए भी उनको जंगलो की खाक छांने पड़ी यह सब दुष्ट कोरव कर रहै थे प्रन्तू करन केवल समय उनके पुर्व कर्मो का भोग उनको करवा रहा था चुकी पाडव धर्म की शर्ण मे थे इस लिए स्वम कृष्ण उनकी सुर्क्षा कर रहे थे और अंतोगतवा उनको विजय श्री मा पहल जताया।

साई कुपया से मेने इस परम रहस्ये को समझा और अब संसार मे रहते हुए भी संसार के भोतिक सुखो से उदासीन हु सुवा को ही अनपा मोका धर्म और कर्म बना लिया है

साई कृपया सब पर निरर्तण बरस्ती रहे । साई राम

इस धरती मे जिव सिर्फ कर्म भोग के लिए आया है, शुभ-अशुभ कर्म उसके अपनी स्वम की इछा है पहल मालीक के हाथ मे है।

।। दैहिक दैविक भोतिक यह तिनो ताप की दवानंन मे जिव जल रहा है ।।